पुराने व नये नियमों का अंतराल

I. परिचय के लिए-ऐतिहासिक फासला-सूचना के स्रोत

पुराने और नये नियम में चार सौ वर्ष की ऐतिहासिक दूरी है। उन शताब्दियों के दौरान यूनान में साहित्य और कला के उज़म नमूने पेश किए गए थे; सिकन्दर ने पूरे पश्चिमी एशिया में यूनानी बाजुओं की ताकत और यूनानी कला को पहुंचाया; जबकि रोम अनजाने में तीबेर के सीमावर्ती नगर से रोमी सड़कों, रोमी नियमों और रोमी *सज़्यता* को फैलाकर परमेश्वर के राज्य और धर्म के लिए मार्ग तैयार करने और उसे फैलाने के लिए ''भूमध्य का राजतन्त्र'' बना। इन शताब्दियों को इब्रानी नबी का स्वर कहकर इसकी निंदा करें तो परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त इतिहासकार की कलम भी शांत थी। यहूदी मामलों का ज्ञान हमें इन तीन मुज़्य स्रोतों से ही होता है, जिनके नाम इस प्रकार हैं:

1. पुराने नियम का अपोक्रिफ़ा (अर्थात अप्रमाणिक पुस्तकें)। इस काल के यहूदी लेख यही हैं जिन्हें पुराने नियम की परमेश्वर की प्रेरणा रहित परिशिष्ट कहा जाता है। इन पुस्तकों से उस समय के इतिहास की काफी जानकारी मिलती है परन्तु इन्हें धर्म पुस्तकें (कैनोनिकल बुज़्स) नहीं कहा जा सकता। जबकि मिसर के स्मारक, बाबुल की खुदी हुई ईंटें, नीनवे की मिट्टी की तज़्तियां और दूसरे कई शोध पवित्र शास्त्र की बातों की ऐतिहासिकता की पुष्टि करते हैं, जबकि अपोक्रिफ़ा के लेखों में तारीखों और अन्य ऐतिहासिक और भौगोलिक गलतियों की भरमार है। ऐतिहासिक तौर पर सबसे मूल्यवान संग्रह के रूप में मज़्काबियों की पहली पुस्तक सबसे महत्वपूर्ण है।

2. जोसेफस के लेख। –जोसेफस एक यहूदी इतिहासकार था जिसका जन्म 37 ई. में हुआ था। वह टाइटस द्वारा यरूशलेम को घेरा डाल कर उसका विनाश करने के समय बच गया था और उसने दो महत्वपूर्ण पुस्तकें: ''द एंटीज़्विटीस ऑफ़ द ज्यूस'' जिसमें सृष्टि के सज़्पूर्ण इतिहास और ''द ज्यूइश वार्स'' जिसमें 170 ई.पू. से उसके समय तक उसके अपने लोगों का वृज़ांत है, लिखीं।

3. यूनानी तथा रोमी लेखक।

II. राजनैतिक काल

राजनैतिक इतिहास में (1) फारसी; (2) मकिदुनिया का [मैसिडोनियन]; (3) मिसरी;

(4) सीरियाई; (5) मज़्काबी, या स्वतन्त्र; (6) रोमी, छह काल।

1. फारसी काल (538-332 ई.पू.)। -यह काल कुस्त्रु महान द्वारा बाबुल पर कज़्ज़ा करने और उसके बाद यहूदी निष्ठा फारसी सज़ा को हस्तांतरित होने से आरज़्भ होता है। इसलिए इसका अधिकतर भाग पुराने नियम के मिसर से निकलने के काल के बारे में है। फारसियों के शासन में यहूदियों पर आम तौर पर सीरियाई सूबेदार या राज्यपाल की अधीनता में उनका ही महायाजक उन पर हुकूमत करता था। मुज़्यतया, फारसी शासन नरम ही था। सामरियों के साथ समस्याएं बनी रहीं। गौरतलब है कि ये लोग बाहर से आए अश्शूरियों के साथ मिल जाने वाले दस गोत्र थे। उन्हें विश्वास से फिर जाने वाले यहूदी उत्साहित करते, इनमें से मनश्शे नामक याजक ने चार सौ ईस्वी के लगभग गिराजीम पर्वत पर एक मन्दिर बनाया था (*तु.* यूहन्ना 4:20)। सामरियों के पास पंचग्रन्थ अर्थात मूसा की पांच पुस्तकें थीं, वे परमेश्वर में विश्वास रखते थे, बलिदान भेंट करते थे, और मसीहा के आने की प्रतीक्षा में थे। उनके धर्म को विकृत यहूदीवाद कहा जा सकता है।

2. मकिदूनी (मैसिडोनियन) काल (332-323 ई.पू.)। -334 के बसन्त में, एक के बाद एक विजय पाता हुआ सिकन्दर एशिया में प्रवेश कर गया। ग्रेनिकस और इस्सुस में देरियस को हराकर और सात माह के कड़े विरोध के बाद सूर पर कज़्जा करके, वह फिलिस्तीन में से होकर मिसर गया। जोसेफस एक दिलचस्प कहानी बताता है कि कैसे एक जुलूस के आगे, महायाजक जद्दुआ ने यरूशलेम नगर के बाहर सिकन्दर से भेंट की; कैसे सिकन्दर असामान्य ढंग से वहां पर विश्वासी बन गया; कैसे उसने सामान्य लूट-पाट से नगर को बज़्श दिया; कैसे मन्दिर में प्रवेश करके उसने यहूदियों के परमेश्वर की उपासना की; और कैसे उसने अपने अधिकारियों को मकिदुनिया में आए एक स्वप्न के द्वारा अपने असामान्य व्यवहार के बारे में बताया, जिसमें उसने उस महायाजक को देखा था जिसने उसे बताया था, कि वह फारसियों पर विजय पाएगा।[1] हर हाल में सिकन्दर और उसके उज़राधिकारी यहूदियों को उपनिवेशक मानने के लिए राजी हो गए होंगे; उन्होंने नील पर बसने वाले यहूदियों को ऐसी सहूलियतें दीं जिससे सिकन्द्रिया एक बड़ी यहूदी जनसंज़्या और शिक्षा का प्रसिद्ध केन्द्र बन गया।

3. मिसरी काल (323-204 ई.पू.)। -सिकन्दर की मृत्यु बाबुल में 323 ई.पू. में हुई। उसके साम्राज्य को बांटने के लिए उसके सेनापतियों में काफी संघर्ष के बाद बीस वर्षों के दौरान, कोई फैसला हुआ। सिल्युकस को एशियाई राज्यों का अधिकतर भाग मिला। सुसा, बाबुल (बेबिलोन) और दमिश्क जैसी पूर्व की प्राचीन राजधानियों से होते हुए, भूमध्य के निकट, ओरोंटस पर उसने अन्ताकिया का भव्य नगर बसाया। वहां से, अढ़ाई सौ साल तक सिल्युसिडे (सिल्युकस के वंशजों) ने समृद्ध सीरियाई राज्य पर शासन किया, और सदियों बाद वहां एशिया की सज़्पज़ि और संस्कृति केन्द्रित रही।

टाल्मी ने मिसर में इसकी नई राजधानी सिकन्द्रिया समेत विजय पा ली, जो तेज़ी से सारे पूर्व की व्यापारिक और साहित्यिक महानगरी बन गई। ये दो राज्य और राजधानियां लज़्बे समय से एक दूसरे की विरोधी थीं। टाल्मी ने पहले सिलियुज़्स से फलस्तीन छीना था।

टाल्मियों के शासन में यह शताब्दी मुख्यतया यहूदियों के लिए समृद्धि का काल था। सबसे महत्वपूर्ण घटना सिकन्द्रिया की बड़ी लाइब्रेरी में मौजूद इब्रानी शास्त्रों का टाल्मी फिलाडेल्फस के आदेश से यूनानी अनुवाद करवाना था। इस कार्य को सज़र अनुवादकों द्वारा किए जाने के कारण, इसे सप्तति अनुवाद के रूप में जाना जाता है।

4. सीरियाई काल (204–167 ई.पू.)। –फलस्तीन फिर से विरोधी शक्तियों के बीच झगड़े की जड़ बन गया। सिलियुसिडे ने अन्ततः टाल्मियों से देश ले लिया। सीरियाई शासन का काल सबसे अन्धकारमय परन्तु पूरे चार सौ वर्षों में सबसे शानदार था। सिलियुसिडे कामुक तानाशाह थे। एंटियोकुस ऐपिफेन्स (175–164 ई. पू.) उनमें सबसे बदनाम था। एक बार मिसर में हारने के बाद लौटते हुए उसने अपना गुस्सा यरूशलेम पर निकाला। उसने इसके चालीस हज़ार लोगों को मौत के घाट उतार दिया, मन्दिर का खज़ाना लूट लिया, और वेदी पर एक सूअरी का बलिदान करके यहूदियों की धार्मिक भावना को भड़का दिया, और मन्दिर के अंदरूनी ज़ाग में शराब जिसमें उस अशुद्ध जन्तु का मांस उबाला गया था, छिड़क दिया। वह हर तरह से यहूदी धर्म और उत्साह को खत्म कर उस देश को यूनानियों का देश बनाना चाहता था। उसने यरूशलेम का मन्दिर बंद करवा दिया और यहूदी धर्म पर मृत्यु दण्ड की आज्ञा देकर पाबन्दी लगा दी। हज़ारों लोगों ने अपने विश्वास को बलिदान करने के बजाय दिलेरी से अपने प्राण ही बलिदान कर दिए। इस साहसिक विरोध में अगुआई करने वालों में याजक- देशभक्तों का एक परिवार था जिसे मक्काबी कहा जाता था।

5. मक्काबी काल (167–63 ई.पू.)। –मतथियास नामक एक बुज़ुर्ग याजक द्वारा स्वतन्त्रता की जंग छेड़ी गई जिसे उसके पुत्रों ने तीस वर्ष तक जारी रखा। यहूदी धर्म के वालेस, यहूदा ने एक साल में पांच युद्ध, जो उसके दस गुणा थे, और ''मक्काबी'' (अर्थात हथौड़ा), जो उस परिवार से जुड़ा है, के खिताब जीते। यहूदा इतना सफल था कि उसने मन्दिर को खोलकर उसे साफ किया और फिर से समर्पित किया। जिसके सम्मान में स्थापन पर्व चलता था (यूहन्ना 10:22)। अन्ततः यहूदा युद्ध में मर गया परन्तु इस कठिन स्वतन्त्रता पर अन्त में उसके भाई शिमौन ने विजय पा ली और सीरियाई लोगों द्वारा उसे मान्यता दी गई। शिमौन के पुत्र, जॉन हिरकेनुस को राजा के पद से सुशोभित किया गया। इस प्रकार अस्मोनी[2] राज्य की स्थापना हुई, जो मक्काबियों के पूर्वज अस्मोनियस[3] के नाम पर था।

6. रोमी काल (63 ई.पू.–70 ई., पौंपे द्वारा यरूशलेम पर कब्ज़ा करने से टाइटस द्वारा इसके विनाश तक)। –मक्काबी काल के अन्तिम वर्ष उनके अंदरूनी झगड़े के थे। अस्मोनी परिवार के कई सदस्य हुकूमत के विरोधी थे और उससे एक दूसरे की हत्या और रोम की बढ़ती हुई शक्ति के आकर्षण के षड्यन्त्र के कारण इतिहास पर धब्बा लग गया। 63 ई.पू., पौंपे महान ने, तीसरे बड़े युद्ध के अन्त में, अपने विजयी लश्करों को सीरिया में ले जाकर सिलियुसिडे राज्य का अन्त किया और यरूशलेम पर कब्ज़ा करके यहूदियों की राजनैतिक स्वतन्त्रता की अंतिम चिंगारी बुझा दी। किसी समय स्थानीय शासक, प्रजा, सीरिया के रोमी राज्यपाल के अधीन रहने वाले असमोनी लोग, उस निरंकुश सज़ा के अधीन

आ गए जो तिबेर से शासन चलाते थे।

हेरोदेस के परिवार–परन्तु अब एक नया निजी बल सामने आता है। एक शताज़्दी तक यहूदी इतिहास में हेरोदेस परिवार ने मुज़्य भूमिका निभाई ज़्योंकि यह एक बहुत महत्वपूर्ण शताज़्दी है जो यीशु मसीह के जन्म, उसके काम, और कलीसिया की स्थापना की गवाह है। हेरोदेस महान (37–4 ई.पू.) इदुमीन (एदोमी) परिवार से था। 47 ई.पू. में उसका पिता एंटिपेटर यहूदिया का राज्यपाल बना था। उसी समय, हेरोदेस गलील का राज्यपाल बना। 40 ई.पू. में उसे रोमी सीनेट ने यहूदिया का राजा बना दिया था, परन्तु उसे अपना राज्य हासिल करना था जो उसने 37 ई.पू. में ले लिया। उसने यहूदी याजक–राजा हिरकनुस की पोती मरियज़्मने से विवाह करके असमोनी परिवार के साथ सिंहासन पर अपना दावा पज़्का कर लिया। हेरोदेस में राज्य प्रबन्ध चलाने का कौशल और समझ थी, परन्तु उसकी बुराइयां इससे भी अधिक थीं। वह चरित्रहीन, कामुक और शकी स्वभाव का आदमी था और उसकी विनाशक ईर्ष्या के एक के बाद एक लोग शिकार होते थे। उसने यरूशलेम में दूसरी कौमों और यूनानियों के रीति–रिवाज शुरू करके यहूदियों के प्रति अपनी घृणा प्रकट की थी। उनकी नज़रों में प्रायश्चित करने के लिए उसने सुलैमान द्वारा बनाए गए मन्दिर से बड़ा, जरूबाबिल द्वारा बनाए गए मन्दिर से विशाल और भव्य मन्दिर बनाया। उसने सामरिया के प्राचीन नगर को सिबस्ते नाम देकर फिर से बनवाया। उसने कैसरिया को फलस्तीन की राजनैतिक राजधानी बनाकर एक नये नगर की स्थापना की। इस तथ्य के बावजूद कि ''उसका सिंहासन उसके सज़्बन्धियों के लहू से सना हुआ था,'' उसने राज्य की बाहरी शान इतनी बढ़ा दी जो दाऊद और सुलैमान को छोड़ किसी और समय में ऐसी न थी। परन्तु यह सारी भौतिक शान यहूदियों को अंधा न कर सकी, अपने पूर्वजों पर और शानदार अतीत पर घमण्ड करने वाले उन लोगों के लिए यह एक तथ्य था कि अब वे किसी के अधीन हैं। उनकी ज़ंजीरों पर सोने का पानी चढ़ा हो सकता है परन्तु थीं तो वे जंज़ीरें ही। हेरोदेस भी उनके लिए एक बाहरी जाति का आदमी था और वह किसी दूसरी बाहरी जाति के प्रतिनिधि के रूप में उन पर शासन कर रहा था। वास्तव में, दाऊद का मन्दिर गिर चुका था और प्रदेश के चुने हुए लोगों का उत्साह अर्थात ''इस्राएल के भीतर इस्राएल'' उसकी प्रतीक्षा कर रहा था जिसने इसे फिर से पुराने समय के जैसा ही बनाना था (आमोस 9:11)।

III. जीवन तथा रीति-रिवाजों में आए परिवर्तन

1. व्यवसाय।–मूलत: इब्रानी लोग किसान और चरवाहे होते थे। सुलैमान के समय और बाद के कुछ राजाओं के शासन में, वे कुछ हद तक बाहर के देशों से व्यापार करने लगे थे। बंदी बनाए जाने के बाद काफी फैल जाने से वे एक व्यापारी कौम बने, जो बाद में उनकी पहचान ही बन गई।

2. भाषा।–बंदी बनाए जाने के समय से उनकी भाषा में भी काफी परिवर्तन आए। सदियां बीतते–बीतते, कसदी, सीरियाई और फारसी भाषाएं उनमें मिल गईं, जिसका परिणाम वही हुआ जो इटली पर असज़्य लोगों द्वारा आक्रमण के बाद हुआ था। आधुनिक इटली की

भाषा मूल लातीनी नहीं है, यद्यपि इसमें मूल भाषा लातीनी के ही शब्द हैं। इसी प्रकार, मूल इब्रानी भाषा एक मृत भाषा बन गई और मसीही युग के आरम्भ के समय फलस्तीन में बोली जाने वाली प्रचलित ज़ाषा अरामी ही थी।

3. धर्म। -धर्म में आए परिवर्तनों को इस प्रकार संक्षिप्त किया जा सकता है:

क. मूर्तिपूजा सदा के लिए अलोप हो जाती है। -बंधुआई में पहले हमने देखा कि मूर्तियों की उपासना करने की प्रवृज़ि बढ़ रही थी। यह बात मूर्तिपूजा के असर वाली किसी भी चीज़ से घृणा करने का कारण बनी।

ख. आराधनालय का उदय। -पुराने नियम में आराधनालय या सिनागोग आरम्भ होने का कोई संकेत नहीं है। शायद आराधनालय बनाना बंधुआई के समय मन्दिर की उपासनाओं के न होने के कारण सम्भव हुआ। एक आराधनालय बनाने के लिए दस आदमी काफी होते थे जबकि यरूशलेम में तो हज़ारों लोग थे, और देश के बड़े-बड़े नगरों में भी बहुत से लोग थे। इन आराधनालयों में प्रतिदिन बलिदान करने के समय प्रार्थनाएं, सब्त के दिन पवित्र शास्त्र पढ़ा जाना और पवित्र शास्त्र का अर्थ करने और आशीष वचन के साथ समाप्ति होती थी।

ग. यहूदी गुटों का उदय। -(1) फरीसी परम्परा के अनुसार मूसा द्वारा दी गई अलिखित व्यवस्था को लिखित व्यवस्था के समान माना जाता था। वे पुनरुत्थान तथा मृत्यु के बाद जीवन की शिक्षा का दृढ़ता से समर्थन करते थे। वे अन्यजातियों के रीति-रिवाजों को मिलाने के विरोधी और कट्टर अलगाववादी थे। वे सचमुच देश का उज़म भाग थे, जिसने फूट डालने वाली शज़्तियों के काम करते हुए भी कौमी पहचान को बनाए रखा था। (2) सदूकी। ये लोग पुनरुत्थान तथा मृत्यु के बाद जीवन का इन्कार करके दूसरी जातियों के साथ मिलने-जुलने, उनके रीति-रिवाजों और विचारों का समर्थन करके अलिखित व्यवस्था के अधिकार का इन्कार करते हुए ऊपर लिखित सभी बातों में फरीसियों का विरोध करते थे। वे रोमियों की वकालत करने वाले राजनीतिज्ञ थे। महायाजक आम तौर पर सदूकियों के दल में से ही होता था। (3) एसनीस समाज से अलग हो जाने वाला तपस्वियों का एक छोटा सा गुट था जिसके लोग विवाह नहीं करते थे, और अपना समय ध्यान लगाने में बिताते थे। उन्हें यहूदी वैरागी कहा जा सकता है।

संसार के सबसे बड़े युग के अन्त में, कौम और देश की स्थिति ऐसी थी। इब्राहीम से की गई वाचा का सांसारिक पक्ष काफी आगे बढ़ चुका है। आत्मिक पक्ष, जिसका आभास लम्बे समय से था, परन्तु हर शताब्दी में महान भविष्यवक्ताओं द्वारा बार-बार इस पर ज़ोर दिया जाता रहा, अब पूरा होने वाला था। यहूदी धर्म का कांटेदार तना पक चुका है और यीशु मसीह के विश्वव्यापी आत्मिक धर्म के रूप में खिलने को तैयार है।

पाद टिप्पणियां

[1]जोसेफस, ''एंटीज़्विटीस,'' पुस्तक XI., अध्याय viii. [2]या हस्मोनी। [3]या हस्मोनियस।